Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(2), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

आधुनिक हिंदी स्त्री आत्मकथा साहित्य में चेतना के विविध आयाम

डा. पूनम पाण्डेय
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
इंदिरागांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
अमरकंटक, मध्य प्रदेश।

प्रस्तावना:

आत्मकथा साहित्य मनुष्य के आत्मानुभवों, अन्तर्द्वन्द्वों और वैचारिक संघर्षों का प्रामाणिक अभिलेख होता है। यह किसी भी इंसान के जीवन में घटित घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण होने के साथ-साथ व्यक्ति के चेतना के विकास की गाथा भी है।हिंदी साहित्य में आत्मकथा साहित्य लेखन का प्रारंभ आधुनिक काल में हुआ। प्रारंभिक साहित्य में जीवनवृत्त, चरित और आत्म वृत्त के कुछ रूप अवश्य मिलते हैं किंतु व्यवस्थित आत्म लेखन बीसवीं शताब्दी में ही शुरू हुआ। यह विधा केवल लेखक के जीवन वृत्त का विवरण ही प्रस्तुत नहीं करती है अपितु उसके माध्यम से युगीन चेतना, सामाजिक संरचना और वैचारिक संघर्षों का गहन चित्रण प्रस्तुत करती है। आत्मकथा का मूलाधार 'स्व' है जो अपने परिवेश, समाज और समय से गहरे रूप से जुड़ा होता है। कहा जा सकता है कि आधुनिक हिंदी आत्मकथा साहित्य का उद्भव उस समय हुआ जब व्यक्ति के 'स्व 'और उसकी व्यक्तिगत अनुभूतियों को महत्व मिलने लगा। यह वह समय था जब भारतीय समाज परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था।

आधुनिक युग में विशेषकर बीसवीं शताब्दी के अंत और इक्कीसवीं शताब्दी के आरंभ में आत्मकथा लेखन में एक आमूलचूल परिवर्तन दृष्टिगत होता है। यह लेखन अब आत्म प्रशंसा और आत्मवृत्तांत तक सीमित न होकर समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े वर्गों की आवाज, अंतःसंघर्षों की अभिव्यक्ति और यथार्थ के कठोर धरातल का साक्षी बन गया है। इस प्रकार आधुनिक आत्मकथाएं चेतना के विविध स्तरों को उद्घाटित करती हैं। यही वह दौर है जब स्त्रियों ने स्वयं अपनी लेखनी उठाई और अपने जीवन के यथार्थ को लिपिबद्ध करना शुरू किया तो वह केवल साहित्य नहीं बल्कि एक ऐतिहासिक हस्तक्षेप बन गया। दरअसल, आधुनिक हिंदी साहित्य में स्त्री आत्मकथा एक सशक्त और प्रभावी विधा के रूप में उभरी है जिसने न केवल साहित्यिक परंपरा को समृद्ध किया अपितु समाज में स्त्री की स्थिति, उसके संघर्ष, उसकी आकांक्षाओं और उसके आत्मबोध को नई दृष्टि प्रदान की है। स्त्री आत्मकथाएं उस व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं जिसमें स्त्री अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत रही है। स्त्री आत्मकथा का उदय वस्तुतः स्त्री की उसे ऐतिहासिक चुप्पी के विरुद्ध एक सशक्त हस्तक्षेप है जो उसे सदियों तक साहित्य और समाज दोनों में हासिए पर रखती रही। इस विधा में स्त्री अपने 'स्व' को पुनः परिभाषित करती है और अपनी अस्मिता, अधिकार तथा अस्तित्व के प्रश्नों को केंद्र में लाती है।

हिंदी साहित्य की महिला आत्मकथा लेखिकाओं ने समाज में स्त्री के लिए आदिकाल से स्थापित मान्यताओं और कुंठित विचारधाराओं के विरुद्ध न केवल आवाज उठाई अपितु समाज द्वारा दी गई प्रताड़ना और नैतिक अधिकारों के

हनन, पुंसवादी विचारधारा का विरोध तथा स्त्री अस्मिता के प्रश्न को प्रमुखता से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। इस संबंध में कल्पना वर्मा लिखती हैं,"आत्मकथा वैसे भी उपन्यास न होते हुए भी अंततः एक उपन्यास जैसा होता है, जिसमें रचनाकार की आत्मा ही नहीं बल्कि 'पर' का भी व्यापक परिदृश्य होता है तथा अंतर्मन का संघर्ष भी दिखाई पड़ता है। किसी भी सफल आत्मकथा में आत्मकथाकार के लिए जीवन की प्रस्तुति से ज्यादा जीवन रचने की प्रक्रिया होती है जिससे वह अपने अनुभवों का सच्चाई से बयान करता है।"[1]

सारांश:

इस लेख में स्त्री चेतना के विविध आयामों का विस्तार से विश्लेषण करते समय हम यह देखेंगे कि कैसे प्रभा खेतान ने अपनी अस्मिता को संबंधों की जटिलता के बीच तलाशा, किस प्रकार मैत्रेयी पुष्पा ने ग्रामीण लोक जीवन में स्त्री की देह और उसकी आकांक्षाओं को स्वर दिया, कैसे रमणिका गुप्ता ने निजी संघर्षों को सामाजिक और राजनीतिक क्रांति से जोड़ दिया, किस प्रकार कृष्णा अग्निहोत्री ने और... और... औरत में स्त्री जीवन के संघर्षों और देह के प्रति वस्तुवादी नजरिए पर आघात किया, 'एक कहानी यह भी' में मन्नू भंडारी ने लेखिका और पत्नी के द्वंद्व के बीच अपनी पहचान की तलाश कैसे की, साथ ही कौशल्या वैसंत्री और सुशीला टाकभौरे जैसी लेखिकाओं के माध्यम से उसे 'दोहरे अभिशाप' को समझने का प्रयास किया जाएगा जो जाति और लिंग के गठजोड़ से पैदा होता है।

बीज शब्द:

स्त्री आत्मकथा,आत्मानुभव,अंतर्द्वंद्व, सामाजिक यथार्थ, वैचारिक संघर्ष, आत्मवृत्त, युगीन चेतना, सामाजिक संरचना, अंतःसंघर्ष, ऐतिहासिक- हस्तक्षेप, स्त्री-अस्मिता।

आत्मकथा की संकल्पना और स्वरूप:

आत्मकथा शब्द आत्म और कथा से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है- स्वयं के जानने की कथा। इस प्रकार आत्मकथा आत्म मंथन और आत्म विश्लेषण के द्वारा अपने जीवन की अन्यान्य घटनाओं को शब्दों के रूप में ढालने वाला एक प्रमाणित दस्तावेज है जिससे अतीत की स्मृतियों और जीवन के भोगे हुए यथार्थ को अभिव्यक्ति मिलती है। आत्मकथा पूरी तरह से 'मैं' पर केंद्रित होती है। इसमें लेखक ही विषय होता है और लेखक ही दृष्टा। चूंकि आत्मकथाकर भी समाज का एक अभिन्न हिस्सा होता है इसलिए आत्मकथा में लेखक के साथ-साथ तत्कालीन समाज, राजनीति,संस्कृति और व्यवस्था का चित्रण भी अनिवार्य रूप से आता है। डॉक्टर त्रिगुणायत लिखते हैं, "आत्मकथा लेखक के जीवन की दुर्बलताओं, सफलताओं इत्यादि का संतुलित और व्यवस्थित चित्रण है जो उसके संपूर्ण व्यक्तित्व के निष्पक्ष उद्घाटन करने में समर्थ होता है।"[2]

स्त्री आत्मकथा का विकास:

जैसा कि उल्लिखित किया जा चुका है कि 20वीं शताब्दी के अंत और 21वीं शताब्दी की शुरुआत में स्त्री विमर्श साहित्य का केंद्री भूत तत्व बना और इसका प्रभाव साहित्य की आत्म लेखन विधा पर अत्यंत गहराई से पड़ा। इस समय की अधिकांश आत्मकथाएं स्त्रियों द्वारा ही लिखी गईं जो हिंदी आत्मकथा लेखन में एक क्रांतिकारी घटना है। इन आत्मकथा लेखिकाओं में जानकी देवी बजाज (मेरी जीवन यात्रा-1956), प्रतिभा अग्रवाल (दस्तक जिंदगी की -1990 और

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(2), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

मोड़ जिंदगी का -1996), कुसुम अंसल (जो कहा नहीं गया -1996),कृष्णा अग्निहोत्री (लगता नहीं है दिल मेरा -1997 और... और... औरत), पद्मा सचदेव (बूंद बावड़ी -1999),शीला झुनझुनवाला (कुछ कही कुछ अनकही-2000), मैत्रेयी पुष्पा (कस्तूरी कुंडल बसै-2002, गुड़िया भीतर गुड़िया -2008),प्रभा खेतान (अन्या से अनन्या-2007) रमणिका गुप्ता (हादसे-2005, आप हुदरी 2014-15), मन्नू भंडारी (एक कहानी यह भी-2007), कौशल्या बैसंत्री (दोहरे अभिशाप), चंद्र किरण सोनरेक्सा (पिंजरे की मैंना-2008), सुषम बेदी (आरोह -अवरोह-2014-15) आदि उल्लेखनीय हैं।

स्त्री चेतना:

चेतना एक बहुआयामी अवधारणा है जिसका संबंध व्यक्ति की जागरूकता, आत्मबोध और उसके परिवेश के प्रति संवेदनशीलता से है। साहित्य में चेतना का अर्थ है जीवन के अनुभवों के प्रति संवेदनशीलता और उनका रचनात्मक अभिव्यक्ति में रूपांतरण। स्त्री चेतना का तात्पर्य यहां केवल शिक्षित या अधिकारों के प्रति जागरूकता भर नहीं है बल्कि अपनी देह, मन, निर्णय और सामाजिक स्थिति पर पूर्ण अधिकार की मांग है।इस संबंध में अर्चना जैन लिखती हैं, "इस गुण धर्म द्वारा हमें आसपास की घटनाओं का बोध प्राप्त होता है और हम विश्व को जान पाते हैं। अतः चेतना के लिए न केवल मस्तिष्क अपितु पदार्थ अथवा वस्तुओं का होना भी आवश्यक है जो मस्तिष्क पर प्रभाव डालते हैं।"[3]

1980 के बाद के दशक में जो स्त्री विमर्श की लहर आई उसने आत्मकथा को एक सशक्त हथियार के रूप में प्रयोग किया। मन्नू भंडारी की 'एक कहानी यह भी', प्रभा खेतान की 'अन्या से अनन्या' और रमणिका गुप्ता की 'हादसे' जैसी कृतियों ने यह प्रमाणित किया की स्त्री की 'निजी' दरअसल राजनीतिक है। 'अन्या से अनन्या' में प्रभा खेतान स्त्री चेतना को स्वर देते हुए कहती हैं, "मेरी यह आवाज एक भिन्न आवाज है और इस आवाज का खतरा सही था कि यह आवाज अनसुनी रह जाती क्योंकि मैं पूरी तरह न तो उदारवादी थी और न ही मार्क्सवादी, न परंपरा से चिपकी रही और न आधुनिकता को भली-भांति ओढ़ पाई। बस दिक्काल के निश्चित दायरे में अपने स्वभावगत तमाम विरोधाभासों के लिए जीती रही। मेरे लिए एक ओर मुक्ति की नई उड़ाने थीं तो दूसरी ओर पुनः लौटकर इस दायरे में बंधे रहने की विवशता थी।"[4]

स्त्री चेतना के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए महादेवी वर्मा कहती हैं, "आज हमारी परिस्थिति कुछ और ही है। स्त्री न घर का अलंकार बनकर रहना चाहती है और न देवता की मूर्ति बनकर प्राण प्रतिष्ठा चाहती है। कारण वह जान गई है कि एक का अर्थ अन्य की शोभा बढ़ाना है तथा उपयोग न रहने पर फेंक दिया जाना है तथा दूसरे का अभिप्राय दूर से उस पूजाये को देखते रहना है या जिसे उसे न देकर उसी के नाम लोग बांट लेंगे।"[5]

चेतना के विविध आयाम:

हिंदी की प्रमुख आत्मकथा लेखिकाएं कुसुम अंसल, कृष्णा अग्निहोत्री, पद्मा सचदेव, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान,रमणिका गुप्ता, मन्नू भंडारी, चंद्र किरण सोनरेक्सा, सुषम बेदी,कौशल्या वैसंत्री और सुशीला टाकभौरे ने अपनी - अपनी आत्मकथाओं में बहुआयामी चेतनाओं की अभिव्यक्ति किया है। उनके आत्मकथा लेखन में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, स्त्रीवादी, आत्म चेतन तथा प्रतिरोधात्मक चेतना के विविध स्वरूप दृष्टिगत होते हैं।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(2), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

सामाजिक चेतना:

स्त्री आत्मकथाओं में सामाजिक चेतना का अर्थ है- समाज की संरचना, उसके नियमों, परंपराओं और असमानताओं के प्रति जागरूक दृष्टि।स्त्री लेखिकाएं अपने अनुभव के माध्यम से समाज में पुंसवादी,जातिवादी, वर्ग,भेद और लैंगिक असमानता को उजागर करती हैं।मैत्रेयी पुष्पा,रमणिका गुप्ता,मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान,सुषम वेदी, सुशीला टाकभौरे आदि महिला आत्म कथा लेखिकाओं की जीवनी पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि कदाचित वे अभिभावकत्व के स्नेहिल सुखों से वंचित रहीं। मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में ग्रामीण समाज की जटिल संरचना, जातिगत विभाजन और स्त्री के प्रति कठोर सामाजिक मानदंडों का यथार्थ चित्रण मिलता है।वे बेबाक तरीके से यह प्रश्न उठाती हैं कि परिवार और समाज किस तरह स्त्री को नियंत्रित करता है। वह भारतीय समाज की परंपरागत मान्यताओं,सामंती विचारधाराओं, कुंठा में पिसती मिथ्या आदर्श से संघर्ष करती हैं और परिवार में कन्याओं के प्रति किए जाने वाले व्यवहार को लेकर लिखती हैं,"आखिर क्यों है ऐसा?कब तक रहेगा ऐसा ही? कौन तोड़ेगा पीढ़ियों के इस लेनदेन को?हम नहीं तो फिर कौन? अब नहीं तो फिर कब?×××××××××× स्त्री के लिए तो तमाम लांछन, तमाम सवाल पैदा कर दिए जाते हैं, मगर इस नन्ही सी जान के लिए तो कोई तोहमत भी नहीं।सिवा इसके कि यह लड़की होकर जन्मी जो इसके हाथ में ही नहीं था। न इसकी मां के हाथ में था। कैसा माखौल है। यह भी स्त्री होने का दोष स्त्री के सिर।"[6]

इस प्रकार मैत्रेयी ने बेटियों की अस्तित्व की रक्षा और उन्हें पढ़ा लिखा कर स्वावलंबी बनाने के लिए संघर्ष छेंड़ा। इन आत्मकथा लेखिकाओं ने लड़की होने, उसके रंग, रूप, शक्ल, आदि के आधार पर परिवार में ही भेदभाव के दंस को झेला है। विशेष रूप से रमणिका गुप्ता, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान,सुषम बेदी आदि लेखिकाएं अपने रूप, रंग, कद को लेकर अपने ही माता-पिता द्वारा भाई-बहनों से तुलना, तिरस्कार, उपेक्षा, प्रताड़ना आदि के विष को झेलते हुए बचपन से जवानी की दहलीज पर कदम रखती हैं। अपनी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' में भंडारी लिखती है, "मैं काली हूं। बचपन में मैं मरियल और दुबली भी थी। गोरा रंग पिताजी की कमजोरी था सो बचपन में मुझसे दो साल बड़ी, खूब गोरी, स्वस्थ और हंसमुख बहन सुशीला से हर बात में तुलना और फिर उनकी प्रशंसा ने ही क्या मेरे भीतर ऐसी हीन भावना की ग्रंथि पैदा कर दी कि नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के बावजूद आज तक मैं उससे उबर नहीं पाई? आज भी परिचय करवाते वक्त जब कोई तरह-तरह के विशेषण लगाकर मेरी लेखकीय उपलब्धियों का जिक्र करने लगता है तो मैं संकोच में सिमट ही नहीं जाती बल्कि गड़ने को हो जाती हूं।"[7]

'अन्या से अनन्या' की लेखिका प्रभा खेतान बच्चे जनने की मशीन बन चुकी मां के स्नेहिल वात्सल्य से वंचित रहती हैं और अपनी दाई को ही अपनी दुनिया मान लेती हैं। प्रभा को घर-परिवार और नौकर-चाकर तक से अपने रूप रंग को लेकर तरह-तरह के ताने सुनने पड़ते हैं। प्रभा दाई मां की अनुपस्थिति में राधा नौकरानी के हाथों नहलाए जाने के प्रसंग कुछ यूं छेंड़ती हैं, "एक तो प्रभा बाई ऐसे ही काली है फिर यह सरसों के तेल की मालिश। कहां से गोरी होंगी?×××× प्रभा बाई को जितना साबुन लगाओ उतना उनका काला रंग चक-चक करता है।"[8]

'आप हुदरी' की लेखिका रमणिका गुप्ता का भी बचपन बेहद कुंठा और उदासी में बीता। असुंदर और जिद्दी होने के कारण मां के प्यार से वंचित रमणिका को 'बदशक्ल', 'बुरी लड़की' जैसे जुमले आए दिन सुनने को मिलते रहते थे। बहन से

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(2), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

तुलना किए जाने तथा उपेक्षा एवं तिरस्कार पूर्ण नजरों से देखे जाने के कारण रमणिका का मन आक्रोश से भर उठा था। यद्यपि कि दादी मां का प्रेम उनके लिए जरूर मरहम का काम करता था। वे लिखती हैं,"मैं सुंदर नहीं हूं इसलिए मुझे अनदेखा करते हैं, मेरी पूछ नहीं है इस घर में चूँकि मैं अच्छी नहीं दिखती। न सही मैं सुंदर! न लगूं मैं उनको क्या? मुझे नहीं लगना है अच्छा किसी को, मुझे नहीं दिखना है सुंदर किसी को भी। मैं जैसी हूं, ऐसे ही मानना होगा मुझे जैसी हूं वैसे ही। जो मुझे प्यार करेंगे, मैं उन्हीं को प्यार करूंगी।" [9]

रमणिका गुप्ता को तो अपने परिवार, रिश्तेदार, मास्टर के हवस का शिकार घर में ही होना पड़ा- यह क्रूर पुंसवादी समाज जो मौका मिलते ही स्त्री को नोचने पर आमादा रहता है।अपनी पीड़ा और वेदना की अभिव्यक्ति वे कुछ इस प्रकार करती हैं, "अगर मैं उसके बारे में कुछ बोलती भी,तो वह झूठ माना जाता। उसके खिलाफ बोलने का मतलब था मार खाना। यह लड़की ही खराब है,पढ़ने के डर से मास्टर की शिकायत करती है। सब ऐसा ही कहते यह विश्वास मेरे मन में बैठ गया था। अब अपराध-बोध अंखुआकर टहनियों और पत्तियों को जन्म दे रहा था।"[10]

सुषम वेदी को भी अपने बचपन में परंपरागत समस्याओं से दो-चार होना पड़ा था। अपने सांवलेपन की हीनग्रंथिता से वे भी कुंठा ग्रस्त थीं।अपनी आत्मकथा 'आरोह-अवरोह' में अपनी पीड़ा कुछ इस तरह व्यक्त करती हैं, "बचपन में मुझमें यह भी ग्रंथि थी कि मैं बहुत सुंदर नहीं हूं।मेरा रंग भी सांवला है। मेरी बहन खूब गोरी थी और सब उसे सुंदर कहते थे, पर पिताजी ने मुझे एक दिन समझाया कि मेरे नैन नक्श बहुत अच्छे हैं, रंग भी सांवला नहीं गेहुंआ है। सो मैं देखने में अच्छी हूं।" 11

राजनीतिक चेतना:

हिंदी स्त्री आत्मकथा लेखन में राजनीतिक चेतना एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उभरती है।यह चेतना केवल प्रत्यक्ष राजनीतिक घटनाओं या सत्ता संरचनाओं के उल्लेख तक सीमित न रहकर स्त्री के निजी जीवन, उसके सामाजिक अनुभवों, लैंगिक असमानताओं और सत्ता के विभिन्न रूपों के प्रति उसकी जागरूकता में भी अभिव्यक्त होती है।स्त्री आत्मकथाएं इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं कि वे 'व्यक्तिगत ही राजनीतिक है' की अवधारणा को मूर्त रूप प्रदान करती हैं।स्त्री आत्मकथा लेखिकाओं ने अपने आत्मकथा लेखन के माध्यम से अपने व्यक्तिगत संघर्षों के साथ-साथ उन सामाजिक-राजनीतिक संरचनाओं की भी कटु आलोचना की जिनके कारण स्त्री को समाज में द्वितीयक दर्जा दिया गया था।

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में ग्रामीण समाज की पितृसत्तात्मक संरचना और उसमें स्त्री की स्थिति का यथार्थ परक अभिव्यक्ति मिलती है। यहां राजनीतिक चेतना ग्राम राजनीति,जातिगत वर्चस्व और लैंगिक भेदभाव के रूप में सामने आती है। मन्नू भंडारी की आत्मकथा में साहित्यिक और सामाजिक जीवन के अनुभव के माध्यम से राजनीतिक चेतना व्यक्त होती है।वे साहित्यिक जगत में व्याप्त सत्ता संबंधों,विचारात्मक संघर्षों और स्त्री की उपेक्षा को उजागर करती हैं। उनके लेखन में स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज की राजनीतिक उथल-पुथल और उसके प्रभावों की झलक भी मिलती है। उषा प्रियंवदा की आत्मकथात्मक लेखन में प्रवासी जीवन से संबंधित राजनीतिक चेतना का एक अलग ही स्वरूप दृष्टिगत होता है। रमणिका गुप्ता तो बिहार की राजनीति में अपनी एक अलग ही पहचान बनाने में सफल रहीं। वे बिहार

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(2), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

और पश्चिमी भारत में बसे नंगे भूखों को उनका हक दिलाने के लिए बड़ी-बड़ी राजनीतिक पार्टियों से अकेले ही लोहा लेती हैं। अपने राजनीतिक जीवन के संबंध में वे लिखती हैं, "बचपन में आजादी के लड़ाई के दौरान कांग्रेस पार्टी की छवि मेरे मन पर इतनी काबिज थी कि मैं कांग्रेस की सदस्य न होते हुए भी अपने को कांग्रेसी मानती थी×××××× यह तो बिहार जाकर पहली बार मुझे कांग्रेसी विरोध के प्रचंड रूप से रू-ब-रू होना पड़ा। तभी मैंने अपने इर्द-गिर्द राष्ट्रीयता के पर्यायी कांग्रेसी आवरण को टूटते देखा।"[12] उनकी चेतना केवल ड्राइंग रूम तक सीमित न होकर कोयला खदानों,आदिवासी आंदोलनों और राजनीतिक गलियारे तक जाती है। यह चेतना निजी दुखों को सामूहिक संघर्ष में बदल देती है।

आर्थिक चेतना:

आधुनिक स्त्री आत्मकथाओं में आर्थिक स्वतंत्रता को चेतना का आधार माना गया है। पद्मा सचदेव की 'बूंद बावड़ी' और अनिता राकेश की 'संतरे और सही' में आर्थिक आत्म-निर्भरता के लिए किए गए संघर्षों को प्रमुखता दी गई है। दरअसल आर्थिक चेतना स्त्री के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि आर्थिक आत्मनिर्भरता ही अक्सर उसके शोषण का मुख्य कारण बनती है। प्रभा खेतान ने अपनी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' में आर्थिक स्वावलंबन की प्रक्रिया और उसके संघर्षों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। वे मानती हैं कि आर्थिक कमजोरी के कारण ही स्त्री कमजोर है। स्त्री की इसी कमजोरी को प्रभा अपनी ताकत बनाती हैं। वे कहती हैं, "और मैं? मैं उस समाज की हूं जहां आदमी की एक ही विशेषता होती है कि वह लाख रुपए का आदमी है या फिर करोड़ का? प्रभा को ज्ञात है कि औरत की सारी स्वतंत्रता उसके पर्स में निहित है।"[13] प्रभा अपने परिश्रम के बल पर एक महिला उद्यमी बनती हैं और भारत में ही नहीं वैश्विक जगत में भी अपने को प्रतिस्थापित करती हैं। वे 'कलकत्ता चेंबर ऑफ कॉमर्स' की प्रथम महिला अध्यक्ष के रूप में भी चुनी जाती हैं।

इसी प्रकार 'कस्तूरी कुंडल बसै' की नायिका कस्तूरी अपनी मेहनत से आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करती है और स्व अर्जित धन से समाज की पीड़ित,उपेक्षित स्त्रियों की आवाज बनती है। अपनी आमदनी से न केवल घर व बेटी की जिम्मेदारी उठाती है अपितु अन्य बेटियों का भी उद्धार करती है। मन्नू भंडारी के जीवन में भी आर्थिक निर्भरता एक महत्वपूर्ण मुद्दा रहा। उन्होंने अपने लेखन और नौकरी के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त किया। पारिवारिक और सामाजिक दावों के झंझावातों से निपटते हुए उन्होंने आर्थिक रूप से वह मुकाम हासिल किया जो स्त्रियों के लिए प्रेरणा स्रोत बना। निसंदेह आर्थिक चेतना ही स्त्री आत्मकथाओं में आत्मनिर्भरता की आवश्यकता और उसके महत्व को रेखांकित करता है।

सांस्कृतिक चेतना:

सांस्कृतिक चेतना का संबंध उन परंपराओं, रीति-रिवाज, मान्यताओं और मूल्यों से है जिससे समाज संचालित होता है। स्त्री आत्मकथाओं में सांस्कृतिक चेतना इस रूप में विवेचित है कि यह परंपराएं किस प्रकार स्त्री जीवन पर प्रभाव डालती हैं। भारतीय संस्कृति के आदर्श जीवन मूल्यों को अपने हिसाब से तोड़-मरोड़ कर सामंतवादी एवं पुंसवादी समाज ने स्त्रियों के अस्तित्व, अस्मिता, अधिकारों पर जो कुठाराघात किया उसने नारियों को नारकीय जीवन जीने के लिए अभिशप्त कर दिया। आधुनिक महिला रचनाकारों ने इस सोच को न सिर्फ तोड़ा अपितु प्रत्येक नारी को नारकीय बंधन के जकड़न से बाहर निकलने का मार्ग भी प्रशस्त किया। मैत्रेयी पुष्पा लिखती हैं, "मैं खुद को तरह-तरह से सांत्वना देती हूं कि

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(2), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

मैंने स्त्री के लिए मनुष्य के स्तर पर जीने की स्थिति ही तो खोजी है, कि मैं पुरुष के समकक्ष अपनी भावनाओं को बराबरी से रखा है, कि मैंने समाज में लोकतांत्रिक विधान की घोषणा की है, कि औरत को हर तरह से सह नागरिक का दर्जा चाहिए।"[14]

ये आत्मकथा लेखिकाएं धर्म के नाम पर स्त्रियों के साथ होने वाले अत्याचारों, यौन-उत्पीड़न, अधिकार हनन आदि का कड़ा विरोध करती हैं। मानव कल्याण को ही वे धर्म मानती हैं तथा संस्कृति के नाम पर स्त्रियों के साथ होने वाले अमानवीय कृत्यों का खंडन करती हैं। धर्म एवं संस्कृति के संबंध में मत व्यक्त करते हुए प्रभा खेतान लिखती हैं, "धर्म और संस्कृति की नजर स्त्री के प्रति हमेशा टेढ़ी रही, राजनीति हमेशा उसे मोहरा बनाती रही और व्यक्ति पुरुष ने उसे कभी ड्राइंग रूम का सामान समझा तो कभी बेडरूम का बिछावन, पुरुष चाहे कोई भी हो, कहीं भी हो, वह शिल्पी,साहित्यकार, मजदूर या कुछ भी क्यों न हो औरत को चबाने से बाज नहीं आता।"[15]

इन लेखिकाओं का मानना है कि भारतीय संस्कृति में सारे नियम केवल स्त्री जाति के लिए ही बनाए गए हैं। व्रत, तीज, करवा चौथ सब महिलाओं का काम है, पुरुष जाति के लिए इस तरह के किसी व्रत का कोई प्रोविजन नहीं है।

स्त्रीवादी चेतना:

स्त्रीवादी चेतना स्त्री आत्मकथाओं का केंद्रीय तत्व है। यह स्त्री के अधिकारों, स्वतंत्रता, समानता और अस्मिता के प्रति जागरूकता को व्यक्त करती है। ये महिला लेखिकाएं पितृसत्तात्मक समाज की संरचना का घोर विरोध करते हुए स्त्री के अधिकारों के लिए जोर-शोर से आवाज उठाती हैं। 'एक कहानी यह भी' में मन्नू भंडारी एक ऐसी नारी की सृष्टि करती हैं जिसकी अपनी अस्मिता, अपना अस्तित्व है। अपने पति राजेंद्र यादव की सहायता के बिना वह घर-गृहस्थी और लेखन के कार्यों के साथ-साथ अपनी बेटी को भी स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाती हैं। वे कहती हैं, "न मैंने राजेंद्र का दिया कभी खाया××××× न पहना बल्कि घर और बच्ची की सारी जिम्मेदारियां भी मैं खुद ही ढोती रही।"[16]

'अन्या से अनन्या' में स्त्री अस्मिता का एक जीवंत उदाहरण प्रभा खेतान कुछ इस तरह प्रस्तुत करते हुए बिना ब्याहे पति डॉक्टर साहब से कहती हैं, "आपसे मैं कुछ मांगने तो नहीं आई, आपको मेरे लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है, मैं अपने आप जी लूंगी। इतना सामर्थ्य है मुझ में लेकिन आप मुझे आई गई लड़कियों के जमात में नहीं बैठा सकते, आप अपनी मर्जी से गैर जिम्मेदारी का जाला कैसे बुन सकते हैं।"[17]

विशुद्ध गृहणी से लेखिका बनी मैत्रेयी पुष्पा अपने उपन्यासों के महिला पात्रों में कहीं न कहीं 'स्व' की खोज करती हुई दिखाई देती हैं। जीवन की जो गूढ़ और महत्वपूर्ण बातें वे अपने पति से शेयर नहीं कर सकी थीं उन बातों को उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से न केवल बयां किया अपितु पुरुष प्रधान समाज को खुली चुनौती भी दिया। अपनी आत्मकथा 'गुड़िया भीतर गुड़िया' में अपने अधिकारों के प्रति सचेष्ट मैत्रेयी एक महफ़िल में जब नाच के लिए उठती हैं तो लोगों की परवाह किए बिना उस पल को पूरी तरह जी लेना चाहती हैं,लोगों को यह एहसास कराते हुए कि मेरे अधिकार मेरे हैं जिसे मुझसे कोई छीन नहीं सकता। न तो मेरे पति और न ही तथाकथित सभ्य समाज के लोग। वे कहती हैं, "मैं नाच के लिए नहीं उठी थी, अपने हकों के लिए खड़ी हुई थी, जिससे मेरी जिंदगी के सम्मान का वास्ता था।"[18]

रमणिका गुप्ता सामंती समाज के स्त्री विरोधी दृष्टिकोण का जबरदस्त प्रतिरोध करती हैं।पुरुषवादी समाज के स्त्री विषयक सोच पर प्रहार करते हुए वे लिखती हैं, "मैं औरत के संदर्भ में पतित शब्द की परिभाषा से सहमत नहीं हूं।

Cover Page
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(2), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

यह शब्द औरत के चरित्र से जोड़ा जाता रहा है और चरित्र का अर्थ केवल औरत के यौन संबंधों को लेकर ही समझा जाता है। औरत के संदर्भ में चरित्र के अन्य गुण या लक्षण जैसे नैतिकता, शालीनता,ईमानदारी,परस्पर सद्भाव या संवेदनशीलता तथा बहादुरी और निडरता आदि को नजरअंदाज कर दिया जाता है।"[19] इसी प्रकार 'आपहुदरी' में वे अपने बचपन और युवावस्था के उन अनुभवों को साझा करती हैं,जिन्हें समाज में निषिद्ध माना जाता है। समस्त सामाजिक वर्जनाओं का खंडन करते हुए वह लिखती हैं, "मेरी देह मेरी अपनी है। मैंने इसे न तो किसी पुरुष के चरणों में अर्पित किया, न ही समाज की झूठी मर्यादाओं की बलि चढ़ाया। मेरा आपहुदरापन ही मेरी असली पहचान है।"[20]

संघर्षों और देह के प्रति वस्तुवादी नजरिये पर कड़ा प्रहार करते हुए कृष्णा अग्निहोत्री कहती हैं, "औरत की देह को समाज ने हमेशा एक उपभोग की वस्तु समझा। जब वह अपनी इच्छा जाहिर करती है तो उसे 'कुलटा' करार दे दिया जाता है।"[21]

इसी प्रकार दलित स्त्री आत्मकथाकारों- कौशल्या वैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप' में देह चेतना का एक अलग स्तर मिलता है। यहां देह पर केवल घर के पुरुषों का अधिकार नहीं है, बल्कि सवर्ण पुरुषों द्वारा जातिगत वर्चस्व दिखाने के लिए भी स्त्री देह का उपयोग किया जाता है। यहां देह चेतना सामाजिक न्याय की मांग से जुड़ जाती है।दलित स्त्री की देह और अस्मिता पर दोहरी मार का चित्रण करते हुए वह लिखती हैं,"दलित स्त्री के लिए घर के भीतर पुरुष की गुलामी है और बाहर सवर्णों का डर। हमारी देह तो बस श्रम और शोषण का एक जरिया बनकर रह गई है।"[22]

इस प्रकार आधुनिक हिंदी स्त्री आत्मकथा साहित्य ने भाषा और संवेदना के नए प्रतिमान गढ़े हैं। यह साहित्य 'सहानुभूति' का नहीं बल्कि 'स्वानुभूति' का साहित्य है। इन आत्मकथाओं ने यह सिद्ध किया कि स्त्री अब इतिहास की मूक दर्शक नहीं बल्कि उसकी रचयिता है। चेतना के ये विविध आयाम समाज को एक अधिक समतामूलक और मानवीय दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष:

आधुनिक हिंदी स्त्री आत्मकथा साहित्य में चेतना के विविध आयामों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि यह विधा केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। इन आत्मकथाओं में स्त्री का आत्मबोध, संघर्ष, अस्मिता और प्रतिरोध एक साथ अभिव्यक्त होते हैं। यह साहित्य स्त्री जीवन की वास्तविकताओं से रूबरू कराने के साथ ही आत्म मंथन के लिए भी प्रेरित करता है। अतएव आधुनिक हिंदी स्त्री आत्मकथाएं चेतना के बहुआयामी रूप का प्रमाणिक अभिलेख हैं, जो साहित्य, समाज और इतिहास तीनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं वर्तमान समाज में स्त्रियां अपने अधिकारों, अस्मिता, स्वालंबन, स्वतंत्रता, गरिमा को लेकर पूरी तरह सचेष्ट हैं। देश की राजनीति से विश्व की राजनीति में अपना सक्रिय योगदान देकर अपनी भूमिका को सार्थक सिद्ध कर रही हैं। समाज निर्माण से लेकर राष्ट्र निर्माण में अतुलनीय सहयोग दे रही हैं साथ ही श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम शिक्षा ग्रहण कर आत्म सम्मान के साथ जीने के सपने को साकार कर रही हैं। जीवन में आने वाले प्रत्येक समस्याओं एवं चुनौतियां का दृढ़ता एवं निडरता के साथ सामना कर रही हैं।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(2), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. स्त्री विमर्श के विविध पहलू; संपादक- कल्पना वर्मा, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, संस्करण -2009, पृष्ठ 79
2. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत, भाग -2, डॉ. त्रिगुणायत पृष्ठ,508.
3. प्रेमचंद के निबंध साहित्य में सामाजिक चेतना; अर्चना जैन, संस्करण-1979, पृष्ठ,16.
4. अन्या से अनन्या; प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2016 ,पृष्ठ 261.
5. श्रृंखला की कड़ियां; महादेवी वर्मा, प्रकाशक- साधना सदन प्रयाग, संस्करण -1944, पृष्ठ 12.
6. कस्तूरी कुंडल बसै; मैत्रेयी पुष्पा, जो घर जारै आपनो......, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2002 पृष्ठ 311.
7. एक कहानी यह भी; मन्नू भंडारी,राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2016, पृष्ठ 18.
8. अन्या से अनन्या; प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2016, पृष्ठ 22.
9. आप हुदरी; (एक जिद्दी लड़की की आत्मकथा), रमणिका गुप्ता, मैं बड़ी होने लगी हूं, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2017, पृष्ठ 36.
10. वही, पृष्ठ 86.
11. आरोह-अवरोह; सुषम बेदी, नन्ही स्मृतियां, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2016,पृष्ठ 42.
12. आपहुदरी; रमणिका गुप्ता,अपराध बोध का बीज, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली,संस्करण-2017, पृष्ठ 84.
13. अन्या से अनन्या;प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2016, पृष्ठ 131.
14. गुड़िया भीतर गुड़िया;मैत्रेयी पुष्पा, पति संग जागी सुंदरी, राजकमल प्रकाशन, नई
15. दिल्ली,प्रथम संस्करण- 2008, पृष्ठ 245 .
16. स्वामी नहीं साथी की तलाश; हंस पत्रिका,जून 1967, प्रभा खेतान, पृष्ठ 33.
17. एक कहानी यह भी; मन्नू भंडारी, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2016, पृष्ठ221.अन्या से अनन्या; प्रभा खेतान,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2016, पृष्ठ 7.
18. गुड़िया भीतर गुड़िया; मैत्रेयी पुष्पा, काहे री नलिनी तू कुम्हलानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण- 2008 पृष्ठ 17.
19. हादसे; रमणिका गुप्ता, औरत अगर खुदसर हो, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण –2015, पृष्ठ 16.
20. आपहुदरी; रमणिका गुप्ता, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2015 पृष्ठ 85.
21. औरत.. औरत.. औरत; कृष्णा अग्निहोत्री, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2010,पृष्ठ 102.
22. pदोहरा अभिशाप; कौशल्या वैसंत्री, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण -1999 पृष्ठ 64.